

विचार बिन्दु

दया और सत्यता परस्पर मिलते हैं, धर्म और शांति एक-दूसरे का साथ देते हैं। –बाइबल

राज के दो साल : पर्यटन उद्योग को आर्थिक विकास के अनुकूल प्रोत्साहित करने की जरूरत

राजस्थान की परंपरा, आस्था, धर्म और संस्कृति की अपनी अलग ही अनूठी पहचान है। यहां ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों की भरमार है। बहुत से मंदिर या धार्मिक स्थल ऐसे हैं जिसके दर्शन के लिए श्रद्धालु जन सैकड़ों,हजारों मील की दूरी का सफर तय कर आते हैं। पर्यटन आज देश और दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में वहां का पर्यटन उद्योग रीढ़ की हड्डी होता है। उस क्षेत्र में देश,विदेश से आने वाले पर्यटकों से ही वहां के सभी उद्योग संचालित होते हैं। पर्यटन से जीवन में शांति मिलती है। पर्यटन का असर सिर्फ आर्थिक विकास पर ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास पर भी पड़ता है।

राजस्थान की प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर, उसे पर्यटन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण क्षेत्र बनाती है। राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की दिशा में राज्य सरकार ने व्यापक योजना पर काम शुरू कर दिया है। राज्य में पर्यटन के क्षेत्र मंम असीम संभावनाएं हैं, इन्हीं को तराशने का कार्य राज्य सरकार कर रही है।प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के “विकास भी, विरासत भी” के मूल मंत्र के साथ राज्य सरकार ने गत दो वर्षों में प्रदेश के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गौरव को और समृद्ध करते हुए पर्यटन उद्योग को नई पहचान दी है। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया है कि राजस्थान में पर्यटन के लिए आने वाले देशों-विदेशी पर्यटकों को स्तरीय सुविधाओं के साथ-साथ सुरक्षित और अच्छा वातावरण मिले और वे अपने साथ सुखद अनुभव लेकर जाएँ। पर्यटन देश की अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण आय उत्पादक है। देश की सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक मूल्यों को बढ़ाती है और उनका आदान-प्रदान करता है। पर्यटन के माध्यम से ही लोगो को एक-दूसरे को समझने की समझ बढ़ती है। किसी भी राज्य के लिए पर्यटन और पर्यटक दोनों महत्वपूर्ण होते हैं। पर्यटन का प्रभाव समाज पर पड़ता है। क्योंकि पर्यटक जहां जाता है वहां के समाज की सामान्य स्थिति को स्वीकार कर लेता है। ठीक वैसे ही विदेशी पर्यटक भी जिस क्षेत्र में जाते हैं, उस क्षेत्र की वेश-भूषा, खान-पान, सामाजिक क्रियाओं में घुल-मिल जाते हैं। आज पर्यटन सिर्फ सैर-सपाटे तक ही सीमित नहीं है, उसमें स्वास्थ्य-लाभ, रोमांच, खेलकूद, सांस्कृतिक महत्व और आर्थिक महत्व सब कुछ जुड़ चुका है।

पर्यटन विभाग के मुताबिक राजस्थान अपने विविध पर्यटन उत्पादों, आधुनिक बुनियादी ढांचे और सरकार की दूरदर्शी नीतियों के कारण फेरुलू यात्रियों की पहली पसंद बनता जा रहा है। रोड ट्रिप टूरिज्म, कॉन्सेप्ट टूरिज्म, वॉकेंड गेटवे, धार्मिक पर्यटन और एमआईसीई इवेंट्स के बढते प्रभाव से प्रदेश का पर्यटन उद्योग लगातार नई बुलंदियों को छू रहा है। राजस्थान पर्यटन के क्षेत्र में काफी समृद्धशाली राज्य है। यहाँ के किले, हवेलियाँ, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर मेले, महल, झीलें, पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर रही है। राजस्थान का पर्यटन के क्षेत्र में विश्व में प्रमुख स्थान है। पर्यटन राज्य के रूप में प्रदेश ने विश्व मानचित्र में अपनी अनूठी पहचान बनाई है। राज्य में पर्यटन के विकास के लिए किये जा रहे सतत प्रयासों का परिणाम है कि वर्ष 2024 में देशी पर्यटकों की संख्या में 28.50 प्रतिशत तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या में 21.92 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। इसी प्रकार वर्ष 2025 में अगस्त माह तक, वर्ष 2024 की समान अवधि की तुलना में देशी एवं विदेशी पर्यटक यात्राओं में 11.71 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पर्यटकों में राजस्थान के प्रति बढ़ते आकर्षण की बानगी है कि वर्ष 2025 में अगस्त तक राज्य में 15 करोड़ से अधिक देशी पर्यटक तथा लगभग 12 लाख विदेशी पर्यटक राजस्थान आए हैं। पर्यटन के क्षेत्र में राजस्थान देश में पांचवें स्थान पर है। जोडीभी की बात करें तो प्रदेश में पर्यटन व्यवसाय का 12.78 प्रतिशत का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रदेश में भ्रमण के लिए आने वाले मेहमानों को नए अनुभव प्रदान करने तथा हर उम्र के पर्यटकों को आकर्षित

हमारी विरासत आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में बिखरी पड़ी है जिन्हें संरक्षित सहेजना चुनौतीपूर्ण है। ग्रामीण अंचलों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासतों की भरमार है। इस विरासतों की सार संभाल के साथ इन्हें ग्रामीण पर्यटन से जोड़ दिया जाए तो ना केवल क्षेत्र का समुचित विकास हो सकेगा। वहीं इन विरासतों को नए मायने मिलने से बड़ा पर्यटन सर्किट विकसित हो सकता है। जिससे क्षेत्र की कायापलट हो सकती है।

सर्किट और ट्राइबल टूरिस्ट सर्किट को 100– 100 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जा रहा है। महाराणा प्रताप टूरिस्ट सर्किट के अंतर्गत महाराणा प्रताप से जुड़े चावंड, हल्दीघाटी, गोगुंदा, कुंभलगढ़, दिवेर और उदयपुर जैसे ऐतिहासिक स्थलों को शामिल किया जाएगा। वहीं जनजातीय संस्कृति, कला और विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए विकसित किये जा रहे ट्राइबल टूरिस्ट सर्किट के एक स्रोतमाता अभयारण्य, ऋषभदेव, गौतमेश्वर मंदिर और मातृकुंडिया जैसे स्थलों को विकसित किया जा रहा है। इसके अलावा ब्रज चौरासी परिक्रमा और कृष्ण गमन पथ जैसा परियोजनाओं का कार्य भी किया जा रहा है।

प्रदेश में प्राचीन और ऐतिहासिक धर्म स्थलों की यात्रा के लिए हर साल देश-विदेश से लाखों लोग आते हैं। इन यात्रियों को और अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा धार्मिक पर्यटन की दिशा में भी अभूतपूर्व कार्य किये जा रहे हैं। विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल खाट्वाग्रामजी, पुष्कर, नाथद्वारा, श्री महावीर जी और गलता तीर्थ को जोड़ते हुए एक समग्र धार्मिक पर्यटन सर्किट विकसित किया जा रहा है।

राजस्थान में बॉर्डर टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए जैसलमेर जिले में तनोट माता मंदिर के विकास हेतु डीपीआर तैयार की जा रही है तथा भारत-पाक सीमा पर बीएसएफ रिट्रोटेसरेमनी के आयोजन के लिए तनोट में कॉम्पलेक्स का निर्माण कार्य प्रगति पर है। हेरिटेज संरक्षण की दिशा में राज्य सरकार द्वारा शेखावाटी हवेली संरक्षण योजना लागू की गई है, जिसके अंतर्गत बुंसुर्त, सीसर और चूरू जिलों की 662 हवेलियों को संरक्षण हेतु चिह्नित किया गया है। इसके साथ ही राज्य में अब तक 62 नई हेरिटेज होटल एवं सम्पत्तियों को हेरिटेज प्रमाण-पत्र प्रदान किया गए हैं।

राजस्थान अपनी ऐतिहासिक धरोहरों, स्थापत्य कला, लोक संस्कृति, रंग-बिरंगे उसकों, मेले - ठेलो और प्राकृतिक विविधताओं के कारण भारत ही नहीं, विश्व में एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। हेरिटेज इमारतों, हेरिटेड होटलों, शाही किलों, महलों और रेलीते टीलों और यहां की मेहमाननवाजी के प्रति आकर्षण के चलते राजस्थान शाही शादियों और फिल्म पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र बन गया है। इसे देखते हुए राज्य सरकार ने प्रदेश में डेस्टिनेशन वेंडिंग और फिल्म पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई कार्य किये है। फिल्म पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2024 एवं 2025 में फिल्मफेन, डॉक्यूमेंट्री और विज्ञापन शूटिंग हेतु 86 अनुमतियां जारी की गई। इसके अतिरिक्त, प्रतिष्ठित आईफा अवार्ड के 25वें समारोह का आयोजन भी 7 से 9 मार्च 2025 को जयपुर में किया गया, जिससे राजस्थान को वैश्विक स्तर पर व्यापक पहचान प्राप्त हुई। पहली बार जयपुर में “Wed in India Expo” का आयोजन किया गया, जिससे राज्य में वेंडिंग टूरिज्म को नई पहचान मिली है। प्रदेश में विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं के चलते यहां पारम्परिक पर्यटन से इतर वेलनेसटूरिज्म के प्रति भी लोगों का आकर्षण बढा है। राज्य को सांस्कृतिक विरासत को जन-जन तक पहुंचाने के लिए इस वर्ष सभी संभाग मुख्यालयों पर पहली बार भव्य स्तर पर घूमर फेस्टिवल का आयोजन किया गया। जयपुर के पौण्ड्रक पार्क में महिलाओं के लिए विशेष तीज मेले का भी प्रथम बार आयोजन हुआ। राज्य सरकार द्वारा 17 दिसम्बर 2024 को प्रारम्भ की गई पंच गौरव योजना जिलों की विशेषताओं को वैश्विक स्तर पर लाने की अभूतपूर्व पहल है। इस योजना के अंतर्गत 550 करोड़ रुपये के बजट से प्रत्येक जिले को उसकी विशिष्ट पहचान के आधार पर विकसित किया जा रहा है, जिससे जिले अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और स्थानीय विशेषताओं के माध्यम से अपनी विशिष्ट पहचान बना सके।

हमारी विरासत आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में बिखरी पड़ी है जिन्हें संरक्षित सहेजना चुनौतीपूर्ण है। ग्रामीण अंचलों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासतों की भरमार है। इस विरासतों की सार संभाल के साथ इन्हें ग्रामीण पर्यटन से जोड़ दिया जाए तो ना केवल क्षेत्र का समुचित विकास हो सकेगा। वहीं इन विरासतों को नए मायने मिलने से बड़ा पर्यटन सर्किट विकसित हो सकता है। जिससे क्षेत्र की कायापलट हो सकती है। इससे एक तरफ जहाँ हमारी अमूल्य विरासत संरक्षित होगी वहां दो हाथों को रोजगार मिलेगा। आज आवश्यकता इस बात कि राजस्थान में पर्यटन को रोजगारोन्मुखी बनाने के लिये मूलभूत सुविधाएं विकसित कर समाज के हर तबके को इससे जोड़ा जाये। मगर यह तभी संभव है जब पर्यटन स्थलों की सुरक्षा के लिहाज से सुरक्षित बनाने के साथ आवागमन की सुविधा सुगम हो।

–अतिथि संपादक, बालमुकुन्द ओझा वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल

गुरुवार 25 दिसम्बर, 2025
राशिफल - 25 दिसंबर 2025
पौष मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरुवार , वज्र योग विक्रम सम्वत् 2082, बालव करण, धनिष्ठा नक्षत्र दिन 1.49 तक चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।
पंडित अनिल शर्मा
गृह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरु-मिथुन, शुक्र, धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में संचार करेगा। आज रवियोग प्रातः 8.18 से आरम्भ होगा। आज क्रिसमस दिवस (ईसा जयंती) बड़ा दिन, पंचक आज महामना मालवीय और अटल बिहारी जयंती है। श्रेष्ठ चौघड़िया - शुभ-सूर्योदय से 8.15 तक, लाभ-अमृत 11.09 से 12.27 तक, शुभ 4.14 से सूर्यास्त तक राहुकाल - 1.30 से 3.00 तक सूर्योदय 7.17 सूर्यास्त 5.36

‘हार नहीं मानूँगा’ अटल जी की वो गूँज जो आज भी देश को प्रेरित कर रही है...

 साराधर्भित भाषण आज भी जीवंत है। शब्दों के जादूगर और विचारों के क्रांतिकारी थे अटल जी।
अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर में एक साधारण परिवार में हुआ। सामान्य परिवार से निकलकर वे सुशासन का मॉडल बने, भविष्य के भारत के कल्पना पुरुष। बचपन से ही राष्ट्रभक्ति की भावना उनके रग-रंग में थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव ने उनकी नींव मजबूत की। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जेल गए, लेकिन हार नहीं मानी। पत्रकारिता से राजनीति तक का सफर तय करते हुए उन्होंने भारतीय जनसंघ और फिर भाजपा को मजबूती दी। जब कांग्रेस का विकल्प बनना आसान नहीं था, तब लालकृष्ण आडवाणी, मुखली मनोहर जोशी जैसे साथियों के साथ मिलकर उन्होंने पार्टी को चुनौतियों से निकालकर सफलता के सोपान तक पहुँचाया। उन्होंने राष्ट्र को सर्वोपरि माना – दल से बड़ा देश, संगठन से बड़ा संविधान।
1998 का वह दौर याद कीजिए, जब देश राजनीतिक अस्थिरता की चपेट में था। नौ वर्षों में चार लोकसभा चुनाव हो चुके थे। सत्ता की अस्थिरता ने जनता को निराश किया था। ऐसे में अटल जी ने प्रधानमंत्री का पद संभाला और देश को स्थिर सरकार दी। लेकिन उनकी राजनीति सत्ता की लालसा से परे थी। 1996 में लोकसभा में उन्होंने कहा था, मैं उस सत्ता को चिमटे से

इसके पग पखारता है । पावस के काले-काले मेघ इसके कुंजल केश है। चाँद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं, मलयानिल चँवर घुलता है । यह वन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है । यह अर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है । इसका कंकर-कंकर शंकर है, इसका बिंदु-बिंदु गंगाजल है। हम जिणेंगे तो इसके लिए, मरेंगे तो इसके लिए । उन्होंने बतलाया कि हिन्दू धर्म क्या संस्कृति की एक बड़ी विशेषता समय के साथ बदलने की उसकी क्षमता रही है । अटलबिहारी वाजपेयी कहा करते थे कि मनुष्य जीवन अनमोल निधि है, पुण्य का प्रसाद है । हम केवल अपने लिए न जिए, औरों के लिए भी जिए । जीवन जीना एक कला है, एक विज्ञान है । दोनों का समन्वय आवश्यक है उन्होंने अनेकों बार कहा है कि भारत के लिए हैसते-हैसते प्राण न्योछावर करने में मैं गर्व का अनुभव करूँगा।

अटल बिहारी जी का जन्म ग्वालियर में 25 दिसम्बर 1924 को हुआ था उनके माता पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी एव कृष्णा वाजपेयी था । रामचंद्र वीर द्वारा रचित अमर कृति "विजय पताका" पढ़ कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। अटल जी की बी.ए. की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हुई। अटलजी ने राजनीति शास्त्र से प्रथम श्रेणी में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। एलएलबी की पढ ई की बीच में ही फिल्म देकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम में लग गए। भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से अटल जी भी प्रमुख नेताओं में थे । उन्होंने लम्बे समय



डॉ. जे.के. गर्ग

वाक् चातुर्य के धनी राष्ट्र भक्त मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की संकल्प शक्ति, योगीराज भगवान श्रीकृष्ण की राजनीतिक कुशलता चातुर्य एवं कूटनीति और आचार्य चाणक्य की निश्चयात्मिका बुद्धि के धनी राजनीतिज्ञ व्यक्तियों में जन नायक अटल बिहारी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है क्योंकि अटल जी ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र सेवा हेतु अर्पित किया था। उनका तो मनत्र था देश के लिए जियें और देश के लिए ही मरें, भारत माता का कण-कण शंकर है, वहीं पानी की बूंद-बूंद गंगाजल है ।अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, भारत तो जीता-जागता राष्ट्रपुरुष है ।हिमालय इसका मस्तक है, गौरीशंकर इसकी शिखा है । कश्मीर किरिटे है, पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं । दिल्ली इसका दिल है । विन्ध्याकान्त कटि है, नर्मदा करधनी है । पूर्वी और पश्चिमी घाट इसकी दो विशाल जंघाएं हैं । कन्याकुमारी इसके चरण है, सागर

विद्यार्थी ऐसे विषयों पर शोध करें, जिनका लाभ देश और समाज को मिले : राज्यपाल

बीकानेर, (कासं) । राज्यपाल एवं महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे ने कहा कि विद्यार्थी शोध के लिए ऐसे विषयों का चयन करें, जिनका देश और समाज को लाभ मिले। साथ ही विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता में वृद्धि हो। राज्यपाल बुधवार को महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के संत मीराबाई सम्भागर में आयोजित विश्वविद्यालय के दशम दीक्षांत

समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। राज्यपाल ने कहा कि विद्यार्थियों के शोध का वृहद स्तर और दीर्घकालीन लाभ मिले। विश्वविद्यालय शिक्षा के केंद्र बने। विद्यार्थियों को यहां शिक्षा का बेहतर वातावरण मिले। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसरों को साफ-सुथरा, हरा-भरा बनाए रखने और शिक्षकों को भी अपने पद की गरिमा और मर्यादा बनाए रखने का आवाहन

किया। राज्यपाल ने संयमित दिनचर्या के महत्व को बताया और विद्यार्थियों से योग एवं प्राणायाम को दिनचर्या का हिस्सा बनाने का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि भारत के युवा अत्यंत प्रतिभाशाली हैं। हमारी बौद्धिक क्षमता का पूरी दुनिया लोहा न माना है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2004 में भारत, विश्व की 12वीं और वर्ष 2014 में में 11वीं बड़ी अर्थव्यवस्था थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

भी नहीं छूड़ेंगा, जो पार्टी तोड़कर और जोड़-तोड़ से नया गठबंधन बनाकर मिले। और उन्होंने जोड़-तोड़ की राजनीति से दूर रहकर पीएम पद से इस्तीफा दे दिया। 1999 में राजनीतिक षड्यंत्रों के कारण मात्र एक वोट के अंतर से सरकार गिरी, लेकिन उन्होंने लोकतंत्र की मर्यादा को बरकरार रखा। कांग्रेस ने उन्हें गद्दार कहा, फिर भी उन्होंने अपनी शालीनता नहीं छोड़ी, अमर्यादित शब्दों का प्रयोग नहीं किया।

अटल जी की बोलने की कला अद्भुत थी। विरोधी भी उनके भाषणों के मुग्ध थे। उनका कथन – सरकारें आएंगी, जाएंगी; पार्टियाँ बनेंगी, बिगड़ेंगी; मगर देश रहना चाहिए – राष्ट्रभक्ति की मिसाल है। जनवरी 2004 में विश्व शांति सम्मेलन में उन्होंने कहा, भारत अपने लंबे इतिहास में कभी आक्रमणकारी या तानाशाही नहीं रहा। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से प्राणी प्राण के कल्याण की आकांक्षा रखता है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण देकर उन्होंने भारतीय भाषा की गरिमा को वैश्विक पटल पर स्थापित किया। आपातकाल के दौरान जेल में रहते हुए उन्होंने कैदी कविराय की कुंडलियां समेत कई कविता संग्रह लिखे। उनकी प्रसिद्ध कविता छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता संघर्ष के दौर में लाखों को प्रेरित करती है। वे लोगों को सिखाते थे कि सरकारें उम्मीदों पर खरी उतरें,

अटल जी ने 1984 में भविष्यवाणी की थी अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा। और यह सब सच साबित हुआ। उनकी सादगी और शालीनता की मिसाल आज भी प्रासंगिक है। शासन में सुधार के उनके प्रयास जनता के जीवन में प्रतिबिंबित हुए। उन्होंने सुशासन की नींव डाली, जिसे आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी आगे बढ़ा रहे हैं। मोदी सरकार

न कि निराश करें।

अटल सरकार की उपलब्धियाँ भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हैं। 11 मई 1998 को पोखरण में परमाणु परीक्षण ने भारत को गौरवान्वित किया। एनडीए सरकार बनने के कुछ दिन बाद ही यह परीक्षण हुआ, और अटल जी ने किसी अंतरराष्ट्रीय दबाव की परवाह नहीं की। कारगिल युद्ध का दौर, सुरक्षा चुनौतियाँ, संसद पर आतंकवादी हमला इन सबमें अटल जी का नेतृत्व अडिग रहा। उन्होंने राष्ट्रभक्ति को कार्य में उतारा, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का चेहरा बना। आईटी और दूरसंचार को बढ़ावा देकर तकनीक को आम आदमी तक पहुँचाया। स्वर्णिम चतुर्भुज योजना ने महानगरों को एक सूत्र में जोड़ा। सर्व शिक्षा अभियान से सभी को शिक्षा सुलभ हुई। गरीबों के कल्याण में समर्पित उनकी सरकार ने विकास दर में ऐतिहासिक प्रगति दर्ज की। पूरे विश्व में अटल सरकार के सुशासन का डंका बजा।

अटल जी ने 1984 में भविष्यवाणी की थी अंधेरा छटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा। और यह सब सच साबित हुआ। उनकी सादगी और शालीनता की मिसाल आज भी प्रासंगिक है। शासन में सुधार के उनके प्रयास जनता के जीवन में प्रतिबिंबित हुए। उन्होंने सुशासन की नींव डाली, जिसे आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी आगे बढ़ा रहे हैं। मोदी सरकार में राजकीय कोष से हो सके इसके लिए उन्होंने वहां के भारतीय राजदूत को आदेश दे दिए हैं। ११९४ में केंद्र की कांग्रेस सरकार ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में भारत का पक्ष रखने वाले प्रतिनिधिमंडल को नुमाईदगी विपक्षी नेता अटल जी को सौंपी थी। किसी सरकार का विपक्षी नेता पर इस हद तक परीसे को पूरी दुनिया में आश्चर्य से देखा गया था । काश: आज के माहौल में ऐसा हो पाता । अटलजी जब विदेश मंत्री बने तो विभाग के अधिकारियों ने उनके कक्ष से प्रथम प्रधानमंत्री नेहरूजी की फोटो को हटाने पर उन्हें प्रताड़ित करते हुये उनसे कहा कि परम्परा की पालना होनी चाहिए इसलिए ये नेहरूजी की फोटो वापस लगाएँ । वाजपेयी जी ने पाकिस्तान से सामान्य सम्बन्ध बनाने के लिए 19 फरवरी 1999 को लाहौर तक की बस दुवारा सफर किया वाधा बॉर्डर पर तत्कालीन पाक प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने उनका स्वागत किया किन्तु पाकिस्तान ने 3 मई 1999 को कोटा गणिल में अतिक्रमण कर उसे हड़पना चाह तब भारत ने उसे कारा जवाब दिया, यह संघर्ष 26 जुलाई तक चला हमारी बहादुर सेना ने कारगिल को अपने कब्जे में ले लिया इसलिए प्रति वर्ष 26 जुलाई को हम कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाते है । वाजपेयी जी ने पाकिस्तान से पुन:सामान्य सम्बन्ध बनाने के लिए तत्कालीन पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के साथ आगरा में 14 से 16 जुलाई 2001 तक शिखर वार्ता की किन्तु कोई नतीजा नहीं निकला और पाक अपनी हरकतों से बाज नहीं

आयाक। 13दिसम्बर 2001 को संसद पर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकी हमला हुआ जिसमें दो लोगों की मृत्यु हो गई । इस आतंकी हमला 2004 के चुनावों में प्रमुख मुद्दा बना और एॅन डी ए की पराजय का एक कारण बना। वाजपेयी जी प्रथम गैर कांग्रेसी पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने गठबंधन सरकार को न केवल स्थायित्व दिया अपितु सफलतापूर्वक संचालित भी किया। अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की संभावित नाराजगी की परवाह नहीं करते हुए राष्ट्र हित में 1998 में दूसरा परमाणु परीक्षण कर राजनीतिक परिपक्वता पर प्रचय दिया। स्मरणो्थ है कि उन्होंने इस परमाणु परीक्षण को अमेरिका एवं अन्य विपक्षित देशों की गुप्तचर एजेंसियों को भनक तक नहीं लगने देा अटल जी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और नानाजी देशमुख आदि नेताओं से राजनीति का पाठ पढा था । जनता पार्टी की मोरारजी देसाई की सरकार में वाजपेयी जी सन् 1977 से 1979 तक विदेश मंत्री रहे उन्होंने अपने दायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक किया । अटल जी पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर देश को एवं हिन्दी की गौरवान्वित किया था। अटल जी की वाणी में सदैव विवेक और संयम होता है। अटल जी के वें 101वें जन्मदिवस पर सभी भारतीय उन के श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

डॉ. जे के गर्ग पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा, जयपुर

अटल जी के सपनों को साकार कर रही है एक सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण, जहां भ्रष्टाचार का कोई स्थान नहीं। अटल जी सदैव अटल हैं, उन्होंने संवैधानिक मूल्यों को सुरक्षित रखा, देश को नई दिशा और प्रगति दी।

आज जब हम उनकी जन्म शताब्दी के एक वर्ष बाद 1०1वीं जयंती मना रहे हैं, तो लगता है कि वे हमारे बीच ही हैं अपनी कविताओं में, अपने योगदान में, अपनी मुस्कान में। उन्होंने सिखाया कि जीवन बंजारों का डेरा है आज यहां, कल वहां लेकिन दिशा हमेशा राष्ट्र की ओर हो। अटल जी का जीवन हमें बताता है कि छोटे मन से बड़ा नहीं हुआ जा सकता, टूटे मन से खड़ा नहीं रहा जा सकता। वे भविष्य के भारत के कल्पना पुरुष थे, जिन्होंने तकनीक को आमजन तक पहुँचाया, शिक्षा को समावेशी बनाया और सुरक्षा को मजबूत किया। अंत में, अटल जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहना चाहूँगा कि वे अमर हैं। उनकी विरासत हमें प्रेरित करती है। 25 दिसंबर का यह दिन हमें संकल्प दिलाता है कि हम उनके सुशासन के पथ पर चलें, राष्ट्र को मजबूत बनाएँ। अटल सदैव अटल यह मंत्र हमारे दिलों में बसा रहे। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी को कोटि-कोटि नमन!

					
सिंह	कन्या	सिंह	कन्या	सिंह	कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटक के हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।	व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटक के हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटक के हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटक के हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।	व्यावसायिक कार्यों को प्रार्थमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटक के हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

अटल जी के सपनों को साकार कर रही है एक सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण, जहां भ्रष्टाचार का कोई स्थान नहीं। अटल जी सदैव अटल हैं, उन्होंने संवैधानिक मूल्यों को सुरक्षित रखा, देश को नई दिशा और प्रगति दी।

आज जब हम उनकी जन्म शताब्दी के एक वर्ष बाद 1०1वीं जयंती मना रहे हैं, तो लगता है कि वे हमारे बीच ही हैं अपनी कविताओं में, अपने योगदान में, अपनी मुस्कान में। उन्होंने सिखाया कि जीवन बंजारों का डेरा है आज यहां, कल वहां लेकिन दिशा हमेशा राष्ट्र की ओर हो। अटल जी का जीवन हमें बताता है कि छोटे मन से बड़ा नहीं हुआ जा सकता, टूटे मन से खड़ा नहीं रहा जा सकता। वे भविष्य के भारत के कल्पना पुरुष थे, जिन्होंने तकनीक को आमजन तक पहुँचाया, शिक्षा को समावेशी बनाया और सुरक्षा को मजबूत किया। अंत में, अटल जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहना चाहूँगा कि वे अमर हैं। उनकी विरासत हमें प्रेरित करती है। 25 दिसंबर का यह दिन हमें संकल्प दिलाता है कि हम उनके सुशासन के पथ पर चलें, राष्ट्र को मजबूत बनाएँ। अटल सदैव अटल यह मंत्र हमारे दिलों में बसा रहे। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी को कोटि-कोटि नमन!

—मदन राठौड़, प्रदेश अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी राजस्थान